शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2013

# मुंशी प्रेमचंद और दलित विमर्श
## (गोदान उपन्यास के संदर्भ में)

प्रा.तेजाभाई एन.पटेलिया
एम.एम.चैधरी आर्ट्स कॉलेज
राजेंद्र नगर, भीलोड़ा
साबरकांठा, उत्तर गुजरात

शोध संक्षेप

*भारतीय सामाजिक संरचना का ताना-बाना वर्णाश्रम व्यवस्था के इर्द-गिर्द बुना गया। कालांतर में यह वर्णव्यवस्था जाति व्यवस्था में परिवर्तित हो गई, जिसमें मनुष्य समाज के एक वर्ग से उसके मनुष्य होने के अधिकार को छीन लिया गया। समाज में छुआछूत की भावना इतने गहरे पैठ गई कि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से घृणा करने लगा। कालजयी रचनाकार मुंशी प्रेमचंद ने अपने साहित्य में इसे उजागर किया। उनके श्रेष्ठतम उपन्यास 'गोदान' में दलित-सवर्ण संघर्ष का चित्रण हुआ। प्रस्तुत शोध पत्र में 'गोदान' उपन्यास में दलित विमर्ष की विविध स्थितियों को प्रस्तुत किया गया है।*

## प्रस्तावना

मुंशी प्रेमचंद हिन्दी के एक ऐसे श्रेष्ठतम उपन्याकार हैं जिनके ग्रंथों में दमन और उत्पीड़न के युग के समाज की अवस्था का यथार्थ चित्रण और प्रतिबिंब मिलता है।"1 अपनी मूल निधि करुणा और व्यापक मानवीयता के कारण कोई भी सच्चा साहित्यकार कभी भी शोषकों और उत्पीड़कों के साथ नहीं रहा, पर प्रेमचंद की व्यापक करुणा, इस सांप्रदायिकता से अछूती है। शायद यही कारण है कि प्रेमचंद के साथ हमारे समाज का प्रत्येक वर्ग जो तादात्म्य का अनुभव किया है। इसलिए ही अपने साहित्य में उन्होंने उन मान्यताओं और समस्याओं का स्पष्ट चित्र अंकित किया है, जो मध्यमवर्ग, जमींदार, पूंजीपति के साथ किसान, मजदूर, अछूत और समाज के बहिष्कृत व्यक्तियों के जीवन को संचालित करती है। प्रेमचंद का दृढ़ मत है कि, "जो दलित हैं, पीड़ित हैं, वंचित हैं चाहे वह व्यक्ति हो या समूह। उनकी वकालत करना साहित्यकार का दायित्व है।"2

इस यथार्थ को सभी ने स्वीकार किया है कि दलित चेतना की प्रखर अभिव्यक्ति प्रेमचंद की कहानियों में तथा उपन्यासों में हुई है। प्रेमचंद की इस गहरी और व्यापक संवेदनशीलता को नकारना कृतघ्नता ही होगी।"3

'गोदान' प्रेमचंद का उत्कृष्ट उपन्यास है। इसका मूल्यांकन अनेक दृष्टियों से किया गया है। इस कालजयी कृति के इतने आयाम हैं कि इसे जिस कोण से देखो वही सच्चा प्रतीत होता है। यह ठीक है कि 'गोदान' मुख्यतः ग्रामीण जीवन की कथा है और विशेषतः किसानों के शोषण की

कथा है पर गोदान की कथावस्तु में दलितों के जीवन का भी चित्रण है, जिसकी ओर आलोचकों का ध्यान कम ही गया है। इसका कारण यह हो सकता है कि प्रेमचंद ने दलितों के जीवन पर उस समय लिखा, जब हिन्दी में दलित साहित्य की अवधारणा भी सामने नहीं आई थी। उल्लेखनीय तथ्य यह है कि प्रेमचंद गोदान में दलितों पर बहुत पहले दृष्टिपात करते हैं और उनकी अनेक रचनाओं जैसे कर्मभूमि आदि उपन्यास, कफन, ठाकुर का कुआं आदि कहानियों में भी दलित विमर्ष है।

'गोदान' उपन्यास का नायक होरी है क्योंकि उसी के जीवन की त्रासदी उपन्यास का मुख्य आधार है। हिन्दी के अधिकतर आलोचकों ने होरी को किसानों का प्रतिनिधि पात्र मानकर मूल्यांकन किया है। इस प्रकार 'गोदान' किसानो के शोषण की महागाथा का महाकाव्य बन गया है। साथ ही उसमें दलित समुदाय के शोषण की प्रतिध्वनि भी है। होरी एक छोटा किसान है, पर वह जाति का दलित भी है। वह अनुसूचित जाति का सूचक है। होरी के दलित होने की घोषणा उपन्यास के पात्र दातादीन के इन शब्दों से होती है, "तुम शूद्र हो तो क्या, हम ब्राह्मण हुए तो क्या, हैं तो सब एक ही घर के।"4

होरी अन्य किसानों के समान ही ब्याज के बोझ से दबा है। साथ ही वह अपने गांव में छुआछूत का शिकार भी है। प्रायः जातीय विद्वेष, छुआछूत और ऊंच-नीच के भेदभाव का शिकार दलित होता है। गोबर ने झुनिया से प्रेम किया और उसे होरी ने अपने घर में शरण दी तो इस अधर्म के विरोध में गांव में थू-थू होने लगी। थानेदार ने गांव में आकर अपना रावणी रूप दिखाया। इसके विपरीत पंडित दातादीन के बेटे मातादीन ने चमारिन, सिलिया को बिना ब्याह किए घर में रख लिया तो गांव में चुप्पी छा गई। दूसरे के स्पर्श से अपवित्र हो जाने वाला मातादीन सिलिया के शरीर का भोग करते समय अपवित्र नहीं होता। वह सिलिया को गर्भवती बनाकर रखता है।

इस प्रकार प्रेमचंद ने गोदान में अछूत समस्या का व्यापक रूप में चित्रण किया है। उनका मानना है कि सवर्ण समाज के दंभ के कारण ही अस्पृश्य समस्या जोंक की तरह समाज से चिपकी हुई है। अछूतों का पानी अपवित्र हो जात है किन्तु दातादीन का लड़का मातादीन चमारिन सिलिया को रख लेता है तो वह बुरा नहीं है। वस्तुतः प्रेमचंद ने उच्च वर्ग के दंभ को कई जगह उजागर किया है। ब्राह्मण पात्र के मुख से कहलवाया है, "एक प्रेमी का मन रख दोगी तो क्या बिगड़ जाएगा ? सुनो रानी कभी-कभी गरीबों पर दया करो नहीं तो भगवान पूछेंगे, मैंने तुम्हें इतना रूप दिया था, तुमने उससे एक ब्राह्मण का उपकार भी नहीं किया, तो क्या जवाब दोगी ? बोलो मैं विप्र हूं, रुपये-पैसे का दान तो रोज पाता हूं, आज रूप का दान दे दो।"5

इस प्रकार उच्च वर्ग के शोषण का भाग निम्नवर्ग सदा से बनता आया है। गर्भवती झुनिया को गोबर की बहू समझकर होरी और धनिया ने अपने घर में रख लिया पर गर्भवती सिलिया को मातादीन ने अपने बाप और ब्राह्मण समाज से डरकर घर से बाहर निकाल दिया। धनिया ने उसे शरण दी। सिलिया के साथ मातादीन का स्वार्थ संबंध था। लेखक के शब्दों में, "सिलिया का तन और मन लेकर भी बदले में कुछ न देना चाहता था। सिलिया अब उसकी

निगाह में काम करने की मशीन थी और कुछ नहीं। उसकी ममता को वह बड़े कौशल से नचाता रहता था।"6

एक ओर ठाकुर झिंगुरी सिंह से कहे दातादीन के ये शब्द भी इस बात के प्रमाण हैं, "सिलिया हमारी चैखट नहीं लांघने पाती चैखट, बरतन भांडे छूना तो दूसरी बात है। पोंगा पंडित। दातादीन के लिए स्त्री जाति पवित्र है पर चमारिन सिलिया उसकी चैखट नहीं लांघ सकती। यह दोहरी मानसिकता प्रेमचंद को स्वीकार नहीं है। उन्होंने खुलकर सिलिया का पक्ष लिया है और एक दलित स्त्री को पूरी सहानुभूति दी है।"7

'गोदान' उपन्यास में दलित चेतना उस समय उग्र रूप धारण करती है जब सिलिया के मां-बाप और कुछ चर्मकार सिलिया के साथ हो रहे दुव्र्यवहार और अन्याय का प्रतिकार करने के लिए खलिहान में पहुंच जाते हैं जहां सिलिया पारिश्रमिक के बिना दातादीन की मजदूरी कर रही थी। सिलिया का बाप हरखू दातादीन को चुनौती देते हुए कहता है, "हम आज या तो मातादीन को चर्मकार बनाकर बनाकर छोड़ेंगे या उनका और अपना रक्त एक कर देंगे....तुम हमें ब्राह्मण नहीं बन सकते, मुदा हम तुम्हें चर्मकार बना सकते हैं....हमारी इज्जत लेते हो तो हमारा करम हमें दो।" साथ ही ऐसे मौके पर सिलिया की मां भी विद्रोह करने में आगे आती है। "हम सिलिया को अकेले न ले जाएंगे, उसके साथ मातादीन को भी ले जाएंगे जिसने उसकी इज्जत बिगाड़ी है। तुम बड़े नेमी-धरमी हो, उसके साथ सोओगे, लेकिन उसके हाथ का पानी न पियोगे।"8 कितना बड़ा पाखंड है। इस पाखंड पर उपन्यासकार ने चोट की है और दलित नारी में साहस दिखाया है।

हरखू द्वारा दातादीन को चर्मकार बनाने संबंधी चुनौती को लेकर लेखक ने लिखा है, "दो चर्मकारों ने लपक कर मातादीन के हाथ पकड़ लिये, तीसरे ने झपटकर उसका जनेऊ तोड़ डाला...दो चर्मकारों ने मातादीन के मुंह में एक बड़ी-सी हड्डी का टुकड़ा डाल दिया।

यहां उपन्यासकार ने हमें यह सिद्ध किया है कि जो धर्म भोजन पर ही टिका हो, विश्वास और आस्था पर नहीं, वह कोई धर्म नहीं है। यह प्रसंग गोदान की कथा का मुख्य अंग नहीं है। पर कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। इससे गांव में दलितों के विद्रोह को वाणी मिली है।

'गोदान' में अन्य दलित पात्र भी हैं। जैसे तांगेवाले की पत्नी चुहिया जो गोबर के निकट किसी गंदी बस्ती में रहती है। नल पर पानी भरते हुए गर्भवती झुनिया के साथ वह संपर्क में आती है। उस समय वह झुनिया की प्रसूति जल्द होने की बात करती है। उनकी प्रसूति के वक्त दाई का कोई प्रबंध नही था और न दवा-दारू का। ऐसी विषय स्थिति में झुनिया ने षिषु को जन्म दिया और दाई का काम चुहिया ने किया। दवा के पैसे चुहिया ने दिए। इतना ही नहीं झुनिया के स्तनों में दूध नहीं उतरा तो चुहिया ने अपने स्तनों से दूध पिलाकर उसे मरने से बचा लिया। इस प्रकार यहां उपन्यासकार ने चुहिया के द्वारा यह सिद्ध किया है कि दलित लोगों में मानवीय गुण भरपूर हैं। दलितों के प्रति गहरी सहानुभूति और गहरी संवेदनषीलता के बिना प्रेमचंद दलित पात्रों की सृष्टि नहीं कर पाते। जंगल में रहने वाले दलितों, गरीबों, शोषितों के प्रति प्रेमचंद के हृदय में गहरी मानवीय सहानुभूति है। इसके प्रमाण 'गोदान' में अनेक स्थलों पर मिलते हैं।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि प्रेमचंद ने गोदान में दलितों के गुण-दोषों का जीवंत वर्णन किय है। जिसमें सच्चाई एवं यथार्थ के साथ गहरी मानवीय करुणा भी है। होरी दलितों की दयनीय स्थिति को उजागर करने वाला मुख्य पात्र है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है, "प्रेमचंद शताब्दियों से पददलित, अपमानित और पीड़ित कृषकों, साहस परायण चमारिन तथा दलितों की आवाज थे।"

## सन्दर्भ

1 प्रेमचंद: एक विवेचन, डा.इंद्रनाथ मदान, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ आमुख से

2 आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, डा.सूर्यनारायण रणसुभे, विकास प्रकाशन, कानपुर, पृष्ठ 259

3 हिन्दी उपन्यास: सौ वर्ष का सफरनामा, डा.अब्दुर्रशीद, पार्श्व पब्लिकेशन, अहमदाबाद, पृष्ठ 92

4 हिन्दी उपन्यास: सौ वर्ष का सफरनामा, डा.अब्दुर्रशीद, पार्श्व पब्लिकेशन, अहमदाबाद, पृष्ठ 92

5 गोदान, प्रेमचंद, पृष्ठ 292

6 गोदान, प्रेमचंद, पृष्ठ 276

7 गोदान, प्रेमचंद, पृष्ठ 279

8 गोदान, प्रेमचंद, पृष्ठ 282